इफिसियों

विस्तृत रूपरेखा

I. सलाम: विश्वास योग्य पवित्र लोग के नाम पत्र (1:1, 2)
   क. सेवक: ''पौलुस, प्रेरित'' (1:1)
   ख. ''पवित्र लोग'': इफिसुस के लोग (1:1)
   ग. दायरा: ''मसीह यीशु में'' (1:1)
   घ. सलाम: ''अनुग्रह'' और ''शांति'' (1:2)

II. तेजस्वी कलीसिया का उद्देश्य (1:1—6:21)
   क. हर प्रकार की आत्मिक आशिषें और कलीसिया का उद्देश्य (1:3-14)
      1. मसीह में चुने हुए (1:3, 4)
         क. परमेश्वर की स्तुति हो! (1:3)
         ख. हमारे लिए परमेश्वर की आशीष (1:3)
         ग. परमेश्वर का हमें ईश्वरीय उद्देश्य के लिए चुनना (1:4)
         घ. हमारे बारे में पवित्र और निर्दोष के रूप में परमेश्वर का विचार (1:4)
      2. पहले से ठहराए हुए (1:4-6)
         क. प्रेम में (1:4)
         ख. गोद लेने के लिए (1:5)
         ग. परमेश्वर के अनुग्रह की महिमा की स्तुति के लिए (1:5, 6)
      3. छुड़ाए हुए (1:7)
      4. क्षमा पाए हुए (1:7, 8)
      5. ज्योति जाए हुए (1:8-10)
         क. परमेश्वर का ज्ञान और समझ (1:8, 9)
         ख. परमेश्वर की इच्छा का भेद (1:9)
         ग. मसीह में परमेश्वर की मंशा (1:9, 10)
      6. एक मीरास दी गई (1:10-12)
         क. दिया गया भाग (1:10, 11)
         ख. ठहराई हुई मंशा (1:11)
         ग. उसकी महिमा की स्तुति के लिए मसीह में आशा (1:12)
      7. मसीह में मोहर किए हुए (1:13, 14)
         क. पवित्र आत्मा, मसीही व्यक्ति की छाप (1:13)

ख. पवित्र आत्मा, हमारी मीरास का बयाना (1:14)

ग. परमेश्वर के मोल लिए हुए और उसकी महिमा की स्तुति के लिए छुड़ाए हुए (1:14)

घ. कलीसिया के उद्देश्य की प्राप्तकर्त्ताओं की गहरी समझ के लिए पौलुस की प्रार्थना (1:15-23)

1. परिचय (1:15-18)

क. उनके लिए उसका धन्यवादित होना (1:15, 16)

ख. उसका उन्हें याद करना (1:16, 17)

ग. उसका उनके लिए विनतियां करना (1:18)

2. परमेश्वर की बुलाहट की महानता, उसकी मीरास और उसकी शक्ति (1:18, 19)

क. परमेश्वर की बुलाहट की आशा को जानना (1:18)

ख. परमेश्वर की मीरास की महिमा के घर को जानना (1:18)

ग. परमेश्वर की शक्ति की महानता को जानना (1:19)

3. परमेश्वर की शक्ति दिखाई गई (1:20-23)

क. मसीह को जिलाया गया! (1:20)

ख. मसीह को ऊंचा किया गया! (1:20)

ग. मसीह को अधिकार दिया गया! (1:21)

(1) प्रधानता, अधिकार, सामर्थ और प्रभुता के ऊपर (1:21)

(2) हर एक नाम के ऊपर (1:21)

(3) सदा के लिए सब के ऊपर (1:21)

घ. मसीह को कलीसिया पर सिर बनाया गया! (1:22, 23)

(1) कलीसिया (देह), मसीह (सिर) के अधीन (1:22)

(2) कलीसिया, मसीह की परिपूर्णता (1:23)

ग. कलीसिया के उद्देश्य से बाहर रहने वालों का चित्रण (2:1-3)

1. पाप में मरे हुए (2:1)
2. संसार के साथ चल रहे (2:2)
3. शरीर की लालसाओं में रह रहे (2:3)
4. क्रोध की संतान के रूप में चिह्नित (2:3)

घ. उद्धार की परमेश्वर की सनातन मंशा (2:4-10)

1. प्रेम की मंशा (2:4)
2. जीवन की मंशा (2:5)
3. विरासत की मंशा (2:6-10)

ङ. मसीह के लहू के द्वारा मिलाए गए (2:11-13)

1. पहले मसीह से दूर थे (2:11, 12)
2. मसीह के द्वारा निकट लाए गए (2:13)

च. उसकी देह में मेल सम्भव किया गया (2:14-22)
1. एक देह में सब लोगों के बीच मेल (2:14, 15)
2. एक देह में परमेश्वर के साथ मेल (2:16-22)
क. शत्रुता को एक नई देह में मिटा दिया गया (2:16, 17)
ख. मसीह द्वारा पहुंच (2:18)
ग. विदेशी नहीं, बल्कि संगी स्वदेशी (2:19-22)

छ. अन्यजातियों में पौलुस की व्यक्तिगत सेवकाई (3:1-7)
1. अन्यजातियों की खातिर मसीहा का बंधी (3:1)
2. अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का भण्डारी (3:2)
3. प्रकट किए गए भेद का प्राप्तकर्त्ता (3:3-6)
4. सुसमाचार का सेवक (3:7)

झ. परमेश्वर का ज्ञान प्रकट किया गया (3:8-13)
1. अन्यजातियों में प्रचार करने के लिए अनुग्रह (3:8)
2. परमेश्वर के भेद को प्रकाशमान करने के लिए अनुग्रह (3:9)
3. परमेश्वर का ज्ञान फैलाने की मंशा (3:10)
4. परमेश्वर की सनातन मंशा का पूरा होना (3:11, 12)
5. हियाव न छोड़ने की दिलेरी (3:13)

ञ. सामर्थ, समझ और परिपूर्णता पाने के लिए प्रार्थना (3:14-21)
1. भूमिका (3:14, 15)
2. आत्मा और मसीह की सामर्थ के लिए विनती (3:16, 17)
3. मसीह के प्रेम की समझ के लिए विनती (3:17-19)
4. परमेश्वर की परिपूर्णता के लिए विनती (3:19)
5. स्तुति (3:20, 21)

III. तेजस्वी कलीसिया का व्यवहार (4:1—6:20)

क. ''एकता बनाए रखकर अपनी बुलाहट के योग्य चलो'' (4:1-3)
1. बुलाहट के योग्य ढंग से रहना (4:1)
2. अपने प्रति उचित व्यवहार (4:2)
3. दूसरों के प्रति उचित व्यवहार (4:2)
4. एकता बनाए रखना (4:3)

ख. सात गुणा एकता होना (4:4-6)
1. एक ही देह (4:4)
2. एक ही आत्मा (4:4)
3. एक ही आशा (4:4)
4. एक ही प्रभु (4:5)
5. एक ही विश्वास (4:5)

6. एक ही बपतिस्मा (4:5)
7. एक ही परमेश्वर (4:6)

ग. कलीसिया के लिए मसीह के दानों को समझना (4:7-16)
1. विजयी मसीह दान देता है (4:7-10)
2. दान जो मसीह ने दिए (4:11)
क. प्रेरित (4:11)
ख. भविष्यवक्ता (4:11)
ग. सुसमाचार सुनाने वाले (4:11)
घ. रखवाले (4:11)
ङ उपदेशक (4:11)
3. उन दानों का उद्देश्य जो मसीह ने दिए (4:12)
4. उन दानों के लक्ष्य जो मसीह ने दिए (4:13-16)
क. नवजात कलीसिया को बड़ा करना (4:13)
ख. देह के हर अंग का विकास (4:14-16)

घ. मन की सोच में नये होने पर (4:17-32)
1. ''अंधकार से ज्योति में मुड़ आओ'' (4:17-19)
2. ''पुराने मनुष्य से नये मनुष्य में बदल जाओ'' (4:20-24)
क. ''पुराने मनुष्य को उतार डालो'' (4:20-22)
ख. ''नये हो जाओ'' (4:23)
ग. ''नये मनुष्यत्व को पहन लो'' (4:24)
3. ''झूठ से सच में बदल जाओ'' (4:25)
4. ''क्रोध से नियन्त्रण में बदल जाओ'' (4:26, 27)
5. ''चोरी करने से काम करने वाले बन जाओ'' (4:28)
6. ''गंदी बातें करने से अच्छी बातें करने वाले बन जाओ'' (4:29)
7. ''आत्मा को शोकित करने वाले से उसे आनन्द देने वाले में बदल जाओ'' (4:30)
8. ''कड़वाहट से करुणामय बन जाओ'' (4:31, 32)

ङ. ''मसीह के नमूने का अनुसार करते हुए प्रेम में चलो'' (5:1-6)
1. परमेश्वर और मसीह के प्रेम का अनुकरण करते हुए (5:1, 2)
2. आज्ञा मानने की जीवनशैली अपनाते हुए (5:3-6)

च. ''ज्योति की संतान की तरह चलो'' (5:7-14)
1. ज्योति के लिए फल लाते हुए (5:7-10)
2. अंधकार के कामों को ठुकराते और सामने लाते हुए (5:11-13)
3. सावधान रहते हुए (5:14)

छ. ''बुद्धिमत्ता से चलना'' (5:15—6:20)
1. परमेश्वर और दूसरों पर फोकस करते हुए ध्यान से चलना (5:15-21)

क. ''अवसर को बहुमूल्य जानना'' (5:15, 16)
ख. ''परमेश्वर की इच्छा को समझना'' (5:17)
ग. ''आत्मा से परिपूर्ण होना'' (5:18-21)
(1) ''गाने में परमेश्वर की आराधना करना'' (5:19)
(2) ''धन्यवाद देना'' (5:20)
(3) ''एक दूसरे के अधीन होना'' (5:21)

2. पत्नियों और पतियों के रूप में सम्बन्धों का सम्मान करना (5:22-33)
क. पत्नियां: ''अधीन हों'' (5:22-24)
ख. पति: ''प्रेम करने वाले बने'' (5:25-33)

3. माता पिता और बच्चों के रूप में सम्बन्धों का सम्मान करना (6:1-4)
क. बच्चे: ''आदर करें और आज्ञा मानें'' (6:1-3)
ख. पिता: ''शिक्षा और चेतावनी दें'' (6:4)

4. स्वामियों और दासों के रूप में सम्बन्धों का सम्मान करना (6:5-9)
क. दास: ''आज्ञाकार बनें'' (6:5-8)
ख. स्वामी: ''भलाई करें'' (6:9)''

5. प्रभु में मज़बूत बने रहना (6:10-20)
क. ताड़ना: ''बलवंत बनो'' (6:10)
ख. निर्देश: ''परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो'' (6:11-17)
ग. विनती: ''प्रार्थना करो और जागते रहो'' (6:18-20)

IV. आशीष वचन: शांति और सांत्वना की आशीष (6:21-24)
क. पौलुस की परिस्थितियों का समाचार (6:21, 22)
ख. शांति और अनुग्रह के अभिवादन (6:23, 24)